AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में बैगा जनजाति का सामाजिक व आर्थिक अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

राजु चन्द्राकर,
शोधार्थी, भूगोल विभाग
देव संस्कृति विश्वविद्यालय ग्राम–सांकरा, कुम्हारी जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

डॉ कुबेर सिह गुरुपंच,
शोध निर्देशक, भूगोल
प्राचार्य देव संस्कृति कॉलेज आफ एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी, खपरी दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

शोध सार

भारत की प्राचीन धरती पर छत्तीसगढ़ के प्राकृतिक सम्पदा से संपन्न कबीरधाम जिले के मैकाल पर्वत श्रेणी पर निवास करने वाले बैगा जनजाति है। यह जनजाति मुख्यतः कबीरधाम जिले के बोडला पंडारिया व भोरमदेव के आसपास क्षेत्र के गांव में पाए जाते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ के पिछड़ी बैगा जनजाति के जीवन स्तर सामाजिक व आर्थिक अध्ययन पर आधारित हैं। यह अध्ययन कबीरधाम जिले के मैकल पर्वत श्रेणी पर स्थित विभिन्न ग्रामों का अध्ययन है। अध्ययन में 250 बैगा परिवारों के सामाजिक व आर्थिक क्रियाकलापो व समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में तथ्यों का संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची उपकरण का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द

बैगा जनजाति, सामाजिक, आर्थिक।

प्रस्तावना

आदिम जनजाति बैगा जो भारत सरकार के द्वारा घोषित 72 विलुप्त जाति में से एक हैं। भारत के संविधान के अनुच्छेद में 366 (25) अनुसूची जनजाति के संदर्भ में उन समुदाय के रूप में करते हैं जिन्हें संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार अनुसूचित किया गया है। जनजाति शब्द का मूल अर्थ आदिवासी हैं और आदिवासी शब्द का अर्थ आदिम है। अर्थात् प्राचीन समय में निवास करने वाले आदिवासी मूलतः निवास करने वाले जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। इसका जीवन शैली आज भी वर्तमान समय में प्राचीन पद्धतियों से प्रचलित होता आ रहा है। वर्तमान समय में बैगा जनजाति शिकार करने, मछली पकड़ने, लकड़ी काटने, बीमारी और बाधा का जड़ी–बूटी तंत्र से उपचार व स्थानीयकरण कृषि करते हैं, जिन्हें बेवार कृषि कहते हैं। बैगा जनजाति मैकाल पर्वत श्रेणी के कबीरधाम जिले के बोडला, रेगाखार,चिल्फी और भोरमदेव के आस पास के क्षेत्र में पाए जाते हैं। बैगा जनजाति की उपजाति– बिझावर, धरौतिया, नरौतिया राई, रैमेना, नाहर है। कबीरधाम जिले को विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा का विकास अधिकरण 2 सितंबर 2009 में किया गया। बैगा जनजाति की उत्पत्ति नागा बैगा, बिंझवार, भारोटीया, नरोटीया, राम भैना, कटभैना, दुधभैना, गोडभैना आदि से हुआ हैं। इस जनजाति के देवी देवता बूढ़ा देव है। बैगा जनजाति के महिला माथे पर गोदना गोदवाने की प्रथा हैं।

बैगा छत्तीसगढ़ की एक विशेष पिछड़ी जनजाति है। छत्तीसगढ़ में इसकी जनसंख्या 2011 जनगणना के अनुसार 89,744 दर्शाई गई हैं। इस जाति की साक्षरता 40.6 प्रतिशत तथा पुरुषों की साक्षरता दर 50.4 प्रतिशत महिला की साक्षरता दर 30.8 प्रतिशत हैं। कबीरधाम जिले का क्षेत्रफल 4447.5 वर्ग किलोमीटर अक्षांश $21^0$32″ से $21^0$35″ उतर देशांतर $80^0$48″ से $81^0$28″ पूर्व में स्थित है और जिले के कुल जनसंख्या 8,22,526 है।

बैगा जनजाति के व्यक्ति संगीतप्रिय हैं। यह त्यौहार विवाह एवं अनेक पर्व में नाच गान करते हैं। यह बिना सिंगार के नृत्य नहीं करते, कुछ नृत्य में स्त्री व पुरुष दोनों नृत्य करते हैं। इसके गीत में परधौनी व फाग गीत प्रचलित है व नृत्य में कर्मा, बिल्मा, सैला व फाग नृत्य करते हैं।

बैगा परिवार

पंचायत बैठक

अपने ग्रंन्थ का अध्ययन

कंबल वितरण कार्यक्रम में सम्मिलित

शोध अध्ययन की समीक्षा

बैगा जनजाति के उत्पत्ति को लेकर कोई साक्ष्य प्रमाण नहीं है। अंग्रेज के शासनकाल से ही बैगा जनजाति पर शोध का कार्य प्रारंभ हो गया था। स्वतंत्रता के पूर्व व स्वतंत्रता के बाद अनेक शोध कार्य हो रहे हैं, परंतु वर्तमान समय में बैगा जनजाति की स्थिति में कुछ विशेष रूप से परिवर्तन नहीं आए हैं।

1. वेनियर एल्विन 1939 "द बैगा" में जनजाति के बारे में विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। इस पुस्तक में बैगा जनजाति के जीवन से संबंधित प्रत्येक पहलू पर प्रकाश डाला है। यह जनजाति एकांत जीवन निर्वाह जीना पसंद करती हैं। सर्वप्रथम वेरियर एल्विन ने 1949 में बैगा के जीवन का प्रत्येक पहलू पर विशेष रूप से प्रकाश डाला, जिसमें स्वास्थ्य गति स्थिति भी शामिल हैं।
2. झारिया ज्योति शर्मा, अवधेश एवं गौतम राजेश कुमार 2014 को स्टैंडर्ड एंड इकोनामी कंडीशनर बैगा आप मंडला डिस्ट्रिकर (मध्य प्रदेश) पर अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया, जिसमें बैगा जनजाति का रहन सहन वेशभूषा आदि को बताने का प्रयास किया ।
3. जैन ए के एवं शर्मा ए एन 2009 ने द इंपैक्ट आप एजुकेशन द इकोनॉमी उमंग द बैगा ट्राइव इन मंडला मध्य प्रदेश इंडिया में बैगा जनजाति के शिक्षा के माध्यम से आर्थिक सुझाव का सहज माध्यम से वर्णन किया है।
4. निर्गुणी 1986 में बैगा जनजाति के जीवन विधि एवं प्राकृतिक में स्पष्ट किया कि यहां कम संसाधन में जीवन यापन करना, कम वस्त्र धारण करना, बेवार खेती करना, पशुओं का शिकार फंदे व तीर धनुष के द्वारा करना इसका महत्व पूर्ण केंद्र बिंदु हैं।

5. यादव एवं गजपाल 2019 विशेष पिछड़ी बैगा जनजाति के शिक्षा की समस्या का अध्ययन किया जिसमे बताया गया कि शिक्षा के विकास में क्या–क्या समस्या है।

उद्देश्य

हर अध्ययन कार्य के लिए एक निश्चित उद्देश्य होता है जिससे उस विषय पर पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सके। प्रस्तावित शोध निम्न उद्देश्य हेतु प्रस्तुत हैः

- कबीरधाम जिले के बैगा जनजाति का सामाजिक व आर्थिक सर्वेक्षण करना जिससे उनके जीवन स्तर, व्यवसायिक स्थिति का ज्ञान हो सके।
- कबीरधाम जिले के बैगा जनजाति का सामाजिक आर्थिक क्रियाकलाप रहन–सहन, रीति–रिवाज, खानपान, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं यातायात आदि का अध्ययन करना।
- कबीरधाम जिले के बैगा जनजाति के कृषि भूमि व ग्रामीण जीवन पर प्रभाव का अध्ययन।
- कबीरधाम जिले की बैगा जनजाति के सामाजिक व आर्थिक समस्या का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र बैगा जनजाति का किया गया है जो एक पिछड़ी जनजाति हैं। बैगा जनजाति मुख्यता कबीरधाम जिले के $21^0$32" से $21^0$35" उत्तरी अक्षांश तथा $80^0$48" से $81^0$28" पूर्वी देशांतर है। जिले के कुल क्षेत्रफल 44,470.5 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक रूप से कबीरधाम जिले को 5 तहसील और 4 विकासखंड में बांटा गया है जिसमें नगर पंचायत 5 नगर पालिका 1 तथा गांव की संख्या 1006 हैं। 2011 जनगणना के अनुसार यहां की जनसंख्या 8,22,526 है। साक्षरता दर 50.33 प्रतिशत है। जिसमें कबीरधाम के रेगाखार, चिल्फी, बोडला और भोरमदेव के आसपास बैगा जनजाति पाए जाते हैं।

शोध की प्रविधियां

प्रस्तुत शोध प्रबंध का अध्ययन अल्पसंख्यक बैगा जनजाति का है। अध्ययन हेतु 250 घरों का चयन दैवनिर्देशन प्रणाली किया जाएगा। प्रत्येक परिवार के मुखिया से साक्षात्कार किया गया है।

आदिवासी क्षेत्रों में प्राथमिक तथ्यों का संकलन अनुसूची प्रविधि, निरीक्षण पद्धति, साक्षात्कार, व्यक्तिगत अध्ययन विधियों से किया जाएगा। इस कार्य हेतु अनुसूचियों तथा मार्गदर्शिका वस्तु स्थिति की वास्तविकता को शोध प्रदर्शन में प्रस्तुत करने हेतु छायांकन लोकगीत तथा अन्य तथ्यों को टेप का प्रयोग किया जाएगा।

द्वितीयक आंकड़ों का संकलन हेतु प्रकाशित पुस्तकें, पूर्व शोध अध्ययन, पत्र, पत्रिकाएं, शासकीय प्रतिवेदन, विभागों से संरक्षित अभिलेख व अन्य माध्यम जैसे समाचार पत्र इंटरनेट टेलीविजन आदि।

तथ्यों का विश्लेषण आवश्यक सांख्यिकी प्रवृत्तियों के द्वारा तत्वों का विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

छत्तीसगढ़ एक आदिवासी प्रदेश होने के नाते यहां के विभिन्न जनजाति समुदाय जिसने कबीरधाम जिले की बैगा जनजाति एक प्रमुख आदिवासी वर्ग है जो अपने विकास के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के बाद पंचायती राज व्यवस्था के माध्यम से बैगा जनजाति के विकास में एक महत्वपूर्ण सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। जिस प्रकार भारत के अन्य प्रातः प्रांतों में आदिवासी समुदाय का विकास के मार्ग पर आगे बढ़ रहे हैं, छत्तीसगढ़ में भी आदिवासी विकास की यह गति देखने को मिलता है। यह अन्य प्रदेशों की तुलना में छत्तीसगढ़ अग्रिम पंक्ति में खड़ा हो सका है। यहां राज्य के निर्माण के बाद बहुत कम समय में सबसे अधिक तेज गति से विकास होने वाले राज्य का पुरस्कार प्राप्त करने वाला पहला राज्य बन चुका है।

आदिवासी हमारे अतीत के प्रतिनिधि हैं, हम परिवर्तनशील और विकसित इसलिए हुए हैं कि हम संपर्क में रहे

तथा हमें विकास के अवसर मिले। आदिवासी इसलिए पिछड़ गए क्योंकि आंतरिक वन्य व पर्वतीय व दुर्गम अंचलों में रहने के कारण विशेष आबादी से कट गए, उसके साथ संपर्क में निरंतर नहीं रह पाए तथा विकास के अवसर उन्हें नहीं मिले।

प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि ना तो इसकी कोई जाति भाषा हैं और ना ही कोई अन्य जाति की भांति लोक नृत्य है। झूम खेती जैसी कोई चीज नहीं है, परंपरागत व्यवसाय जैसे जंगल से शहद निकालना, जंगल से लकड़ी काटना और बेचना शिकार करना आदि। वन संपदा पर आधारित व्यवसाय सरकार द्वारा वन्य एवं जीव कानून के तहत प्रतिबंध किए जाने के कारण इसका परंपरागत व्यवसाय विलुप्त विलुप्त हो गया है और आधुनिकता से जुड़ता जा रहा है। बैगा जनजाति आधुनिकता के प्रभाव के कारण अपने परंपरागत गुणों को खोती जा रही हैं, लेकिन आज भी इसमें टोटम जैसी व्यवस्था जीवित है जादू टोने टोटके में बैगा जनजाति आज भी विश्वास करते हैं, जंगली जड़ी बूटियों में बैग लोगों का विश्वास पहले की भांति हैं और इलाज में व्यापक रूप से इसका उपयोग करते हैं। बैगा जनजाति कृषि के आधुनिक तरीके से उन्नत बीज प्रयोग करना शुरू कर दिया है। जिसके अच्छे परिणाम आए हैं। छत्तीसगढ़ शासन की दृष्टि वृष्टि छाया योजना के अंतर्गत बोर खनन करवाकर खेती कृषि कार्य को बढ़ावा दिया है, जिससें कृषि के प्रति का रुझान बढ़ा है।

संदर्भ सूची

1. पटेल, जी. पी. (1991), ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक समस्या एवं समाधान (मध्यप्रदेश के संदर्भ में) बुलेटिन ऑफ द ट्राईबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट भोपाल, वॉल्यूम –19 नंबर ,1.2 पृष्ठ से 20 –27
2. तिवारी, शिवकुमार,(1984) *भारत की जनजातियां,* नाईनर बुक सेंटर नई दिल्ली, तिवारी, एस. के मध्य प्रदेश के आदिवासी, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
3. वैष्णव, टी.के (2004), *छत्तीसगढ़ की अनुसूचित जनजातियां*।
4. उपाध्याय, विजय शंकर एवं शर्मा विजय प्रकाश, (1989) *भारत में जनजाति संस्कृति,* मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
5. चक्रवर्ती,रवि, राहुल (2009), *छत्तीसगढ़ की भुजा जनजाति में महिला सशक्तिकरण का अध्ययन*।
6. सिह, पीताम्बर (2016), *बैगा जनजाति की सामाजिक स्थिति एवं समाज कार्य हस्तक्षेप*।
7. यादव, अंजली (2012), *छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में बैगा जनजाति के विकास में पंचायती राज व्यवस्था की भूमिका*।
8. गजेंद्र कुमार, अग्रवाल किशोर कुमार, (1988), *बैगा जनजाति के परम पर लोकगीत व नृत्य* (540 – 542)।
10. बसंत, निर्गुणे (1986) *बैगा प्राकृतिक से सीधे संबंध अंतर्गत मध्यप्रदेश का आदिवासी,* संसार भोपाल।
11. सिह एम, (1988), कामकाजी महिलाओ, एक सामाजिक वैज्ञानिक विशलेषण योजना वर्ष –32 .अंक 19 पृष्ट 20–27, नईदिल्ली।
12. उपध्याय, विजय शंकर एवं शर्मा विजय प्रकाश, (1998), *भारत में जनजाति संस्कृति,* मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

––==00==––